प्रश्न-32. स्वदेशी आन्दोलन से आप क्या समझते हैं? राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में इसकी क्या भूमिका रही तथा इसके प्रति कांग्रेस का क्या दृष्टिकोण था?

Answer Steps :

भाग I. भूमिका

- कर्जन के बंगाल विभाजन का परिणाम
- राष्ट्रवादी शक्तियों की प्रतिक्रिया

भाग II. कांग्रेस की रणनीति में परिवर्त्तन का परिणाम

- उदावादियों में उग्रता
- स्वराज का लक्ष्य

भाग III. उद्देश्य

- एकता
- अशांति एवं राजनीतिक हलचल पैदा करना

भाग IV. कार्यक्रम

- विदेशी वस्तुओं का बहिस्कार
- स्वदेशी का प्रचार

भाग V. नई राजनीतिक विचारधारा

- विरोध का नया तरीका
- रचनात्मक कार्यों पर बल

भाग VI. जन आन्दोलन

- स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रथम प्रयास
- सामाजिक आधार मजबूत

Scanned with CamScanner

भाग VII. प्रभाव

- आत्म निर्भरता की स्थिति (शिक्षा, लघु उद्योग)
- देशी उद्योगों को बल (1907 में टाटा)
- सांस्कृतिक विकास - (आमार सोनार बांग्ला गीत, रक्षा बंधन पर्व)
- शिक्षा का प्रसार

भाग VIII. कांग्रेस की नीति

- नरम दल - स्वदेशी पर बल
- गरम दल - बहिष्कार पर बल
- विभाजन (कांग्रेस के विभाजन) (अध्यक्ष पद को लेकर)

भाग IX. निष्कर्ष

- स्वतंत्रता आन्दोलन को नया आयाम
- गाँधी युग के व्यापक जन आन्दोलन की प्रथम झलक

Scanned with CamScanner

उत्तर- स्वदेशी आन्दोलन कर्जन की तात्कालिक प्रशासनिक नीति के विरूद्ध राष्ट्रवादी शक्तियों की प्रतिक्रया थी जिसमें स्वदेशी वस्तुओं एवं संस्थाओं की स्थापना एवं विकास पर बल था।

स्वदेशी आन्दोलन को कांग्रेस की रणनीति में परिवर्त्तन के अन्तर्गत भी देखा जा सकता है। ब्रिटिश शासन की नीतियों ने उदारवादियों में भी उग्रता की स्थिति को उत्पन्न किया। वे स्वराज पर बल देने लगे, विशेषकर कर्जन के द्वारा बंगाल विभाजन के उपरान्त उनका स्वराज स्वदेशी आन्दोलन के रूप में प्रकट हुआ।

स्वदेशी आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य कांग्रेस की बंगाल विभाजन की नीति, "फूट डालो और शासन करों" को विफल कर भारतीयों में एकता को स्थापित करना था और इस एकता से ब्रिटिश शासन के विरूद्ध एक व्यापक आन्दोलन छेड़कर तात्कालिक राजनीतिक स्थिति में अशांति उत्पन्न करना था ताकि स्वतंत्रता आन्दोलन को बल मिले।

इस आन्दोलन में दो प्रकार के कार्यक्रम चलाए गए-**प्रथम कार्यक्रम** के अंतर्गत स्वदेशी वस्तुओं पर बल दिया गया तथा स्वदेशी विचारधारा का स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रचार-प्रसार किया गया था, **दूसरे कार्यक्रम** के अंतर्गत विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। विदेशी वस्तुओं एवं संस्थाओं का बहिष्कार किया जाना भी स्वदेशी को बल प्रदान करता है।

स्वदेशी आन्दोलन के अंतर्गत एक नई प्रकार की राजनीतिक विचारधारा का स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रवेश हुआ। इस नई विचार धारा में नए तरीके से शासन के विरूद्ध कार्यवाही की गई। इसमें बहिष्कार की नीति का प्रथम कार्यान्वयन किया गया। बहिष्कार के साथ-साथ रचनात्मक कार्यों के माध्यम से भी स्वदेशी पर बल दिया जाना बिल्कुल नई संकल्पना थी।

Scanned with CamScanner

इस आन्दोलन में जन आन्दोलन की प्रकृति स्पष्ट दिखाई पड़ती है। यह पहला जन आन्दोलन था जिसने राष्ट्रीय आन्दोलन के सामाजिक आधार को मजबूत किया और ऐसे लोगों को जोड़ा जो अब तक आन्दोलन का हिस्सा नहीं थे। विशेष कर विद्यार्थी, महिलाओं, किसानों एवं मजदूरों ने इसमें भाग लिया और राष्ट्रीय चेतना को नए वर्गों तक पहुँचाया।

स्वदेशी आन्दोलन के व्यापक प्रभाव पड़े। इस आन्दोलन में आत्म-निर्भरता, राष्ट्रीय गौरव की पुनरावृत्ति एवं नए आत्मविश्वास को जन्म दिया। आत्मनिर्भरता के अंतर्गत कपड़ा, बैंक एवं बीमा कम्पनियाँ लोहा उद्योग इत्यादि औद्योगिक उद्योगों की स्थापना हुई जो भारतीय उद्योगपतियों के प्रयास से हुआ। गीत, कविता, नाटक इत्यादि से राष्ट्रवाद एवं देशभक्ति की भावना का प्रचार प्रसार करना सांस्कृतिक विकास को दर्शाता है साथ ही साथ राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना से शिक्षा के विकास को भी बल मिला।

स्वदेशी आन्दोलन के प्रति कांग्रेस की मिली-जुली प्रतिक्रिया रही। नरम पंथी नेताओं ने स्वदेशी कार्यक्रमों को अपना समर्थन दिया और रचनात्मक कार्यों पर बल दिया, जबकि गरम दल के नेताओं ने बहिष्कार पर बल देते हुए ब्रिटिश शासन के विरूद्ध प्रत्यक्ष संघर्ष की नीति को अपनाया। इस वैचारिक मतभेद में कांग्रेस के अंदर विभाजन की पृष्ठभूमि तैयार की।

इस प्रकार स्वदेशी आन्दोलन ने स्वतंत्रता आन्दोलन को एक नया आयाम दिया और कर्जन के बंगाल विभाजन के विरूद्ध जो प्रतिक्रिया स्वदेशी आन्दोलन के रूप में हुई। वह गाँधी युग के व्यापक जन आन्दोलन के पूर्व जन आन्दोलन की प्रथम अभिव्यक्ति थी।

Scanned with CamScanner